परिचय

निर्गमन परमेश्वर की अगुवाई में एक राष्ट्र के जन्म का अर्थात् एक ईश्वरीय राज्य की शुरुवात का विवरण देता है। अब्राहम के वंशज परमेश्वर के लोग कहलाए जो परमेश्वर के उद्देश्यों के लिये छुड़ाए गए थे।

यह पुस्तक उत्पत्ति को पुराने नियम की बाकी पुस्तकों से जोड़ती है। यदि कोई केवल उत्पत्ति पढ़ना चाहता है, तो वह पूछेगा, "आगे क्या हुआ? क्या अब्राहम, इसहाक और याकूब को किए गए वायदे कभी पूरे हुए?" निर्गमन इन प्रश्नों के उत्तर देने में सहायता करता है। यह पाठक को बताता है कि अब्राहम के वंशज मिस्र में एक महान राष्ट्र बन गए थे और फिर परमेश्वर ने उन्हें बन्धुआई से छुड़ाया। वे उसके लोग बन गए, उसकी व्यवस्था के द्वारा चलाए जाते थे। दूसरी ओर, यदि कोई छात्र केवल ऐतिहासिक पुस्तकों (यहोशू - एस्तेर) या भविष्यद्वक्ताओं के लेखों को पढ़ना चाहता था, तो वह सोचता है, "ये कौन लोग हैं? वे कहाँ से आए थे? भविष्यद्वक्ता अक्सर उनकी निंदा क्यों करते थे? परमेश्वर को उनके बारे में इतनी चिन्ता क्यों थी?" विवरण प्रस्तुत करते हुए निर्गमन इन प्रश्नों का उत्तर देता है कि ये वे लोग थे जिन्हें परमेश्वर मिस्र से निकाल लाया था। इस तरह, निर्गमन पूर्वजों और भविष्यद्वक्ताओं के बीच की खाई को भरता है।

नाम और वर्गीकरण

अंग्रेजी बाइबल में, "निर्गमन" का नाम सेप्ट्यूएजिंट (LXX), इब्रानी बाइबल के प्राचीन यूनानी संस्करण से लिया गया है। यूनानी शब्द ἐξόδου *(एक्सोडस)* (ἔξοδος, *एक्सोडोस* से), जो निर्गमन 19:1 में पाया जाता है, का अर्थ है "प्रस्थान।" इसलिये, पुस्तक का नाम इसकी प्रमुख घटना - इस्राएलियों का मिस्र से प्रस्थान के आधार पर रखा गया है।

इब्रानी बाइबल में, इस पुस्तक का नाम इसके पहले दो शब्दों के आधार पर है, וְאֵלֶּה שְׁמוֹת *(वे'हेलेह शेमोथ)*। इस इब्रानी शीर्षक का अनुवाद "और ये नाम हैं," या सिर्फ "नाम" किया जा सकता है।[1]

निर्गमन पंचग्रन्थ की दूसरी पुस्तक है। दो यूनानी शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ "पाँच शास्त्र"[2] है, शब्द "पेंटाट्यूच" पुराने नियम के पाँच पहले पुस्तकों (उत्पत्ति - व्यवस्थाविवरण) को दर्शाता है। इन पाँच पुस्तकों को यहूदी और मसीही दोनों के द्वारा इब्रानी बाइबल में "व्यवस्था" या "तोरह" (תּוֹרָה) कहा जाता है।[3] इन किताबों को मूसा की पुस्तकें भी कहा जाता है क्योंकि मूसा को उनका लेखक माना जाता है।

व्याख्या

निर्गमन की पुस्तक मुख्य रूप से इस्राएल का मिस्र से निर्गमन या प्रस्थान के बारे में है। निर्गमन इस्राएलियों के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण घटना थी। इसने इस्राएल को परमेश्वर द्वारा विशेष रूप से बुलाए गए और आशीषित किए गए लोगों के रूप में परिभाषित किया है। "इस्राएली लोग कौन थे?" ये वे लोग थे जिन्हें परमेश्वर मिस्र से निकाल लाया था। "यहोवा, उनका परमेश्वर कौन था?"[4] वह वही परमेश्वर था जो उन्हें मिस्र से निकाल लाया था।

"निर्गमन" इस घटना के लिये सबसे अच्छा शब्द नहीं हो सकता है। ऐसा नहीं है कि इस्राएलियों ने किसी दिन मिस्र को छोड़ने का निर्णय किया और बस "कूच कर गए।" बल्कि, परमेश्वर ने अपनी शक्ति और पराक्रम के द्वारा उन्हें मिस्र से निकाल लाया। इसलिये, जब इस्राएलियों ने मिस्र छोड़ दिया और जो हुआ, इसके बारे में "छुड़ाना" कहने में एक उचित शब्द है। निर्गमन की पुस्तक ने यह स्पष्ट कर दिया कि इस्राएल का "बाहर निकल आना" उनका स्वयं का कार्य नहीं बल्कि परमेश्वर का था।

इसके अलावा, पुस्तक इस्राएल के छुटकारे के साथ खत्म नहीं होती; यह बताता है कि कैसे परमेश्वर ने इस्राएल के साथ एक वाचा बाँधी। इस वाचा में जीने के लिये नियम और विधियां शामिल थीं। निवासस्थान के निर्माण के लिये भी निर्देश दिए गए थे।

निर्गमन बताता है कि कैसे परमेश्वर ने, अपनी दया से, अपने लोगों को मिस्री बन्धुआई से छुड़ाया, उनके साथ एक वाचा बाँधी, उन्हें अपनी व्यवस्था दी और निवासस्थान को उस जगह के रूप में प्रदान किया जहाँ वह उनके बीच रहता था।

लेखक

मूसा निःसन्देह निर्गमन का लेखक है। यद्यपि निर्गमन की पुस्तक में उसे लेखक के रूप में नहीं पहचाना गया है, परन्तु, कहा जाता है कि उसी ने स्वयं उस व्यवस्था को लिखा जो परमेश्वर द्वारा दी गई थी (24:4; 34:27; 17:14 देखें)। इसी तरह, उसे पंचग्रन्थ (गिनती 33:1, 2; व्यव. 1:1) में अन्य जगहों में लेखक के रूप में कहा जाता है। यीशु ने स्वयं कहा कि उसके बारे में मूसा ने लिखा है: "क्योंकि यदि तुम मूसा का विश्वास करते, तो मेरा भी विश्वास करते, इसलिये कि उसने मेरे विषय में लिखा है। परन्तु यदि तुम उसकी लिखी हुई बातों पर विश्वास नहीं करते, तो मेरी बातों पर कैसे विश्वास करोगे?" (यूहन्ना 5:46, 47)।

यह तथ्य कि नया नियम मूसा को व्यवस्था का लेखक मानता है (मत्ती 19:8; यूहन्ना 7:19; प्रेरितों 3:22; रोमियों 10:5) निर्गमन को मिलाकर उसे पूरे पंचग्रन्थ के लेखक के रूप में स्वीकार करने का आधार प्रदान करता है। फिलिप्पुस ने यीशु के विषय में कहा, "जिस का वर्णन मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं ने किया है, वह हम को मिल गया; वह यूसुफ का पुत्र, यीशु नासरी है" (यूहन्ना 1:45)। सुसमाचार के विवरण मूसा के कथनों और "मूसा की पुस्तक" का उल्लेख करते हैं

(देखें मरकुस 7:10; 12:26; लूका 2:22, 23; 20:37)।

निःसंदेह, पंचग्रन्थ के लेखक के रूप में मूसा को स्वीकार करना, इस सम्भावना से इनकार नहीं करता है कि, कुछ उदाहरणों में, लेख में कुछ बदलाव हो सकते हैं जो कि मूसा के उत्तराधिकारी लेखकों द्वारा किया गया होगा। इसके अलावा, मूसा ने स्वयं व्यवस्था लिखने के लिये पुराने दस्तावेजों का प्रयोग किया होगा। (अधिक जानकारी के लिये देखें *अतिरिक्त अध्ययन: निर्गमन का लेखक।*)

तिथि

पुस्तक लिखे जाने की तिथि मिस्र से निर्गमन के समय के आसपास होने की सम्भावना है। रोनाल्ड एफ. यंगब्लड ने कहा है, "मूसा के पुस्तक की रचना का समय लगभग वही है जब इस्राएली लोग सीनै जंगल के बीच में से जा रहे थे।"[5] विद्वान आज निर्गमन की तिथि के प्रश्न पर विभाजित हैं। पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर, कई टिप्पणीकारों ने लगभग 1290 ई.पू. (पश्च तिथि) को निर्गमन की तिथि बताया। बाइबल के साक्ष्य के कारण, अन्य लेखक ने 1445 ई.पू. (प्रारम्भिक तिथि) के आसपास की तिथि पर ज़ोर देते हैं। (अधिक जानकारी के लिये देखें *अतिरिक्त अध्ययन: निर्गमन की तिथि।*)

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

निर्गमन वृहत् रूप का एक भाग है। इसकी कहानी बिना रुकावट के, उत्पत्ति की घटनाओं के अनुसार आगे चलती रहती है। निर्गमन की इब्रानी पुस्तक एक संयोजन (וְאֵלֶּה שְׁמוֹת, *वे'हेलेह शेमोथ*, "और ये नाम हैं") के रूप के साथ शुरू होता, जो यह दर्शाता है कि यह पुस्तक उत्पत्ति को जारी रखने का कार्य किया। लैव्यव्यवस्था, गिनती, और व्यवस्थाविवरण कहानी को फिर आगे ले जाते हैं। वास्तव में, पुराने नियम की पहली बारह पुस्तकें (उत्पत्ति - 2 राजा), रूत के अपवाद के साथ, एक सतत कहानी बताती हैं।

पुस्तक स्वयं ही याकूब के घराने (इस्राएली लोगों) से शुरू होती है जो मिस्र में रहते थे। ये लोग संख्या में इतने बढ़ गए कि उन्हें मिस्रियों द्वारा दास बनाया लिया गया। पुस्तक बताती है कि कैसे परमेश्वर ने इस्राएल को, अपने प्रवक्ता मूसा और चमत्कारी संकेतों (दस विपत्तियों) का प्रयोग, मिस्र के राजा फ़िरौन को समझाने के लिये अपने साधन के रूप में करे, कि वह उन लोगों को जाने दे। परमेश्वर ने लाल सागर के माध्यम से राष्ट्र को छुड़ाया और उन्हें सीनै पर्वत पर लाया, और मार्ग में उनकी जरूरतों को पूरा किया। वहाँ उसने इस्राएल के साथ वाचा बान्धी। वाचा की शर्तें जो व्यवस्था हैं, वे निर्देशों के साथ मिलापवाले तम्बू के निर्माण के लिये पुस्तक के बाकी हिस्सों में (और पंचग्रन्थ के बाकी हिस्सों में) पाई जाती हैं। यह पुस्तक तम्बू के निर्माण की कथा बताते हुए आगे बढ़ती हैं, जो सोने के बछड़े को दण्डवत करने में इस्राएलियों के धर्म के विरुद्ध जाने से बाधित है और भवन के निवासस्थान के निर्माण के साथ समाप्त होती है।

पंचग्रन्थ की अन्य पुस्तकों से निर्गमन का सम्बन्ध

टेरेन्स ई. फ्रेदेम ने कहा, "निर्गमन की पुस्तक अकेली नहीं है, परन्तु एक बड़े पंचग्रन्थ का एक अभिन्न अध्याय है ... । निर्गमन को पंचग्रन्थ का केंद्र माना जा सकता है।"[6] निर्गमन की पुस्तक उत्पत्ति से कई तरीकों से जुड़ी हुई है:

1. निर्गमन 1:1-5 बताता है कि, उत्पत्ति में इन लोगों के पूर्वज मिस्र में कैसे आए; इन आयतों में उत्पत्ति 46:8-27 में पाई जाने वाली वंशावली का एक छोटा रूप पाया जाता है।
2. उत्पत्ति 12:10-20 में अब्राहम की मिस्र की पहली यात्रा को निर्गमन में इस्राएल के अनुभवों के विवरण देते हुए दिखाया गया है।
3. इस्राएल की बन्धुआई और छुटकारे के भविष्य के बारे में उत्पत्ति 15:13, 14 और फिर 46:3, 4 में बताया गया है।
4. निर्गमन में इस्राएल के परमेश्वर ने स्वयं को अब्राहम, इसहाक और याकूब (निर्गमन 6:2, 3) का परमेश्वर होने का दावा किया।
5. पूर्वजों से प्रतिज्ञा - विशेष रूप से भूमि की प्रतिज्ञा - को बार-बार निर्गमन में बताया गया है (देखें निर्गमन 2:24; 6:4, 5, 8)।
6. यूसुफ, जो उत्पत्ति में मुख्य भूमिका निभाता है, जिसका वर्णन निर्गमन 1 में किया गया है। उत्पत्ति 50:24, 25 के अनुसार, उसकी इच्छाओं को ध्यान में रखते हुए, उसकी हड्डियों को कनान ले जाया गया जिसका विवरण निर्गमन 13:19 में किया गया है।[7]

निर्गमन पंचग्रन्थ के अन्य भागों के साथ अच्छी रीति से जुड़ा हुआ है।[8] लैव्यव्यवस्था सीनै पर दी गई व्यवस्था का वर्णन जारी रखता है, और याजकों के अभिषेक का वर्णन प्रस्तुत करता है जिसके लिये निर्देश निर्गमन 29 में मिलते हैं। गिनती की पुस्तक बताती है कि कैसे इस्राएल ने प्रतिज्ञा की भूमि की ओर यात्रा करने के लिये सीनै पर्वत को छोड़ा। व्यवस्थाविवरण में मूसा ने निर्गमन के अनुभवों को लोगों को स्मरण कराया।

उद्देश्य

निर्गमन का उद्देश्य क्या है? यह पुस्तक तीन प्रकार का उद्देश्य प्रदान करती है।

सबसे पहले, यह इस्राएल की छुड़ौती की घोषणा करती है,[9] परमेश्वर की योजना की चल रही कहानी के भाग के रूप में मानव जाति को बचाने के लिये[10] अब्राहम के लिये अपनी प्रतिज्ञा को ध्यान में रखते हुए की गई घोषणा है। निर्गमन की पुस्तक बताती है कि कैसे परमेश्वर ने अब्राहम के वंश को एक महान राष्ट्र बनाया, लोगों को मिस्र की बन्धुआई से छुड़ाया, और उनके बीच में रहने आया। पुस्तक की संरचना अपने उद्देश्य के रूप में एक तथ्य प्रदान करती है। जैसे यह

खुलती है, इस्राएलियों को दासत्व के रूप में दर्शाया गया है। पुस्तक के अन्त तक, इस्राएल को परमेश्वर द्वारा छुड़ाए गए लोगों के रूप में चित्रित किया गया है जो उसके बनाए गए निवासस्थान में निवास करने के लिये तैयार हैं। पुस्तक के अन्तिम भाग में कहा गया है, "तब बादल मिलापवाले तम्बू पर छा गया, और यहोवा का तेज निवास-स्थान में भर गय" (40:34)। निर्गमन का अन्त परमेश्वर का इस्राएल के साथ वास करेगा जैसी बड़ी बात के साथ होता है।

दूसरा, यह वाचा का विवरण प्रस्तुत करती है जो उस समय से इस्राएल के साथ परमेश्वर के द्वारा किए गए सभी कार्यों के आधार के रूप में कार्य करती थी। बाकी का पुराना नियम इस वाचा के संदर्भ में समझा जाना चाहिए। निर्गमन 19:3-6 कहता है,

> तब मूसा पर्वत पर परमेश्वर के पास चढ़ गया,और यहोवा ने पर्वत पर से उसको पुकारकर कहा, "याकूब के घराने से ऐसा कह, और इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना: 'तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या-क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ। इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे।' जो बातें तुझे इस्राएलियों से कहनी हैं वे ये ही हैं।"

और सब लोग मिलकर बोल उठे, "जो कुछ यहोवा ने कहा है वह सब हम नित करेंगे" (19:8)। यह वाचा है: परमेश्वर ने कहा था कि यदि इस्राएल उसकी इच्छा पर चलेंगे तो इस्राएल उसके लोग होंगे। इस्राएल उन शर्तों से सहमत था। बाद में अपने इतिहास में, जब भी इस्राएल की परमेश्वर के साथ कोई वाचा करने की बात की जाती है, तो विचार यह नहीं होता है कि इस्राएल एक नया या अलग वाचा कर रहा था, परन्तु इस्राएल ने सीनै वाचा के प्रति अपनी वचनबद्धता की पुष्टि की थी।

निर्गमन 19 में पाई जानेवाली वाचा इतनी महत्वपूर्ण है कि बाकी का पुराना नियम इस समझौते के आधार पर समझा जाना चाहिए। पुराने नियम का इतिहास दर्शाता है कि जब तक इस्राएल ने परमेश्वर की आज्ञा मानते हुए वाचा को रखा था, तब तक उसने इस्राएल को विश्वासयोग्यता से आशीष दी। जब इस्राएल ने आज्ञा न मानी (जो अक्सर होता था), तब परमेश्वर ने इस्राएल को दण्ड दिया। इस्राएल के साथ परमेश्वर के वाचा-सम्बन्ध ने भविष्यवक्ताओं द्वारा इस्राएल को दिए गए उपदेशों और दण्डों को आधार प्रदान किया।[11]

तीसरा, इसमें परमेश्वर की व्यवस्था है, जो वाचा का परिणाम था। क्योंकि वाचा के निर्माण और व्यवस्था दिए जाने के बाद, मिस्र से चमत्कारी छुटकारे के साथ निर्गमन की पुस्तक ने इस्राएल को स्मरण कराया कि उनके छुटकारे के साथ जिम्मेदारियाँ आईं। जब लोगों ने वाचा की शर्तों पर सहमति व्यक्त की तो इस्राएल ने इन जिम्मेदारियों को स्वीकार किया। सीनै में मूसा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा

दी गई व्यवस्था ही जिम्मेदारियाँ हैं।

साहित्य का प्रकार

पुस्तक को अच्छी रीति से समझने के लिये, हमें यह समझना चाहिए कि निर्गमन मुख्य रूप से एक कथनात्मक वर्णन है। पुस्तक कविता और कानून व्यवस्था का लम्बा विवरण देती है, परन्तु कविता और कानून व्यवस्था दोनों एक कथा संरचना में समाहित हैं। इसलिये छात्र को कथा तकनीक पर विचार करना चाहिए जिसका प्रयोग लेखक ने किया है। पुस्तक में पाई गई तकनीक इस प्रकार है:

(1) *परिचयात्मक वाक्य (विषय वाक्यों के समान) और सारांश कथन का प्रयोग।* आज के एक सावधानीपूर्वक लेखक की तरह, लेखक ने सामान्य रूप से अपने पाठकों को एक पैराग्राफ या अनुभाग की शुरुआत में बताया, *किसने क्या* किया, और *कब* और *कहाँ* यह किया। पैराग्राफ या अनुभाग के समापन पर, उसने आम तौर पर संक्षेप में अभिव्यक्त किया था जो उसने अभी वर्णित किया था।

(2) *साहित्यिक तकनीकों का प्रयोग,* जैसे मुख्य शब्द और वाक्यांश, और वाक्यांश-विपर्यय। मुख्य शब्दों और वाक्यांशों को यह इंगित करने के लिये नियोजित किया जाता है कि कहाँ से वर्गों की शुरुवात और अन्त है। विपर्यय शैली संरचनाएँ विशेष जोर देने के लिये उपयोग की जाती हैं। "विपर्यय" या उलटे समानान्तरता "एक लतानीय शब्द है जो यूनानी अक्षर χ (*चाई*) के आधार पर उल्लिखित अनुक्रम या समानांतर शब्दों या विचारों के समतुल्यता में ... साहित्यिक इकाई का प्रतीक है।"[12] एक रचनात्मक संरचना में, मरकुस 2:27 के अनुसार, समानान्तर विचारों को ABBA क्रम में व्यवस्थित किया जाता है: "सब्त [A1] का दिन मनुष्य के लिये बनाया गया है [B1], न कि मनुष्य [B2] सब्त के दिन के लिये [A2]।"

(3) *पुनरावृत्ति का उपयोग।* लेखक ने अन्य प्राचीन लेखकों के समान, पुनरावृत्ति का उपयोग किया। उदाहरण के लिये, उसने सब्त आज्ञाओं को छः बार दोहराया और संक्षिप्त सारांश विवरणों सहित, पाँच बार मिलापवाले तम्बू के निर्माण के बारे में जानकारी दी।[13] पाठक आज अक्सर पुनरावृत्ति को अप्रभावी रूप से देखते हैं। परन्तु, निर्गमन के लेखक ने इसे आवश्यक रूप से देखा। क्यों? एक कारण यह है कि पुनरावृत्ति जोर देने के लिये महत्वपूर्ण है; पाठक आज यह मान सकते हैं कि जो दोहराया जाता था वह महत्वपूर्ण माना जाता था। एक और कारण यह है कि, प्राचीन काल में, लेखन आम जनता के लिये आसानी से उपलब्ध नहीं थे। लोग जो अधिकांश मौखिक संस्कृति में रहते थे, जहाँ संदेश बोले और सुने जाते थे। इस्राएली लोग निर्गमन के संदेश के इच्छुक प्राप्तकर्ता थे। जब वे पहली बार निर्गमन "पढ़ते थे," तो वे स्वयं इसे नहीं पढ़ा करते थे, परन्तु उनके सामने पढ़े जाने पर सुना करते थे। ऐसी स्थिति में, पुनरावृत्ति जरूरी है यदि संदेश उन लोगों द्वारा स्मरण किया जाए जिनके लिये इसका उद्देश्य है। परिणामस्वरूप, ये दोहराव, जो कभी-कभी अलग-अलग स्रोतों के संकेत माने जाते हैं, केवल लेखक की वर्णनात्मक

शैली और उसके साहित्यिक उद्देश्य को प्राप्त करने के उसके प्रयास को दर्शाता है।

आधुनिक पाठकों के लिये महत्वपूर्ण

निर्गमन की पुस्तक आज के पाठकों के लिये महत्वपूर्ण समझी जाती है।

इसके बिना, हम नए नियम में पाए जाने वाले बहुत कुछ के बारे में समझ नहीं पाते हैं। यीशु मसीह मूसा के समान एक भविष्यद्वक्ता था (प्रेरितों 3:19-23)। निर्गमन के बिना, क्या कोई उस विचार को समझ सकता है? तम्बू, अपनी बलि व्यवस्था के साथ, मसीही व्यवस्था का "प्रतिबिम्ब" था (इब्रा. 10:1)। तम्बू के निर्माण में जो बातें शामिल थी, इसकी समझ के बिना क्या इस सच्चाई की सराहना की जा सकती है? मसीही "परमेश्वर की निज प्रजा" हैं (1 पतरस 2:9), जैसे इस्राएली पुराने नियम के समय में हुआ करते थे। निर्गमन के बिना, क्या इस तथ्य की सराहना की जा सकती है?

निर्गमन के बिना, लोगों को आज परमेश्वर की सही समझ नहीं हो सकती है। मानव जाति को परमेश्वर को समझने में सहायता करने के लिये बाइबल लिखी गई थी। निर्गमन परमेश्वर के बारे में: उसकी पवित्रता और न्याय और कुचले हुए लोगों के लिये चिन्ता, उसके प्रेम और अनुग्रह और दया के बारे में, उसकी सहनशीलता और धीरज के बारे में, उसके क्रोध और पाप की उसकी सजा के बारे में बहुत कुछ सिखाता है।

निर्गमन के बिना, यह समझना अधिक कठिन होगा कि परमेश्वर को उसके लोगों से क्या आवश्यकता है। यद्यपि निर्वासन की विशिष्ट व्यवस्था मसीही युग में लोगों पर बाध्य नहीं हैं, फिर भी हम निश्चय ही निर्गमन से तर्कपूर्ण परिणाम निकाल सकते हैं कि परमेश्वर सब युग के लोगों से विश्वासयोग्य और आज्ञाकारी होने की और साथी मनुष्यों के प्रति प्रेम दिखाने की माँग करता है।

रूपरेखा

पुस्तक को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है:

I. छुटकारा (1-18)
II. वाचा (19-40)
    A. वाचा और आज्ञा (19-24)
    B. तम्बू का निर्माण (25-40)

अन्य रूपरेखा सम्भव है। वॉरेन डब्लू वाइर्स्बे ने परमेश्वर और उसके लोगों के बीच सम्बन्धों के पहलुओं के अनुसार पुस्तक को विभाजित किया:

I. छुटकारा: परमेश्वर अपने लोगों को छुड़ाता है (1-18)
II. वाचा: परमेश्वर का अपने लोगों के लिये दावा (19-24)

III. आराधना: परमेश्वर अपने लोगों के साथ निवास (25-40)[14]

इस पुस्तक को व्यवस्थित करने की एक अन्य सम्भावना है कि "परमेश्वर के लोगों, इस्राएलियों द्वारा साझा किए गए अनुभवों के अनुसार" जो निम्नलिखित है:[15]

I. परमेश्वर के लोग छुड़ाए गए (1:1-13:16)
II. परमेश्वर के लोगों की अगुवाई की गई (13:17-18:27)
III. परमेश्वर के लोग वाचा का राष्ट्र बन गए (19-24)
IV. परमेश्वर के लोगों को तम्बू के लिये निर्देश दिए गए (25-31)
V. परमेश्वर के लोग पाप में: सोने का बछड़ा (32-34)
VI. परमेश्वर के लोग तम्बू का निर्माण करते हैं (35-40)

समाप्ति नोट्स

[1]विलियम सैनफोर्ड लासोर, डेविड एलन हूबार्ड, एण्ड फ्रेडरिक विलियम बुश, *ओल्ड टेस्टामेंट सर्वे: द मैसेज, फोर्म, एण्ड बैकग्राउंड दि ओल्ड टेस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विल. बी. एर्डमन्स पब्लिशिंग कं., 1982), 131. [2]जॉन टेलर, "द 'फाइव बुक्स,'" *एर्डमन्स हैंडबुक टू द बाइबल* में, एड. डेविड अलेक्जेंडर एण्ड पॅट अलेक्जेंडर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विल. बी. एर्डमन्स पब्लिशिंग कं., 1973), 122. [3]तोरह इब्रानी बाइबल के तीन प्रभागों में से एक है। और दूसरे दो भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक और लेख हैं। [4]इस टीका में चार-अक्षर का शब्द "याहवेह" परमेश्वर (יהוה, *यहवह*) के नाम के लिये प्रयोग किया गया है। इस नाम का अनुवाद बाइबल के कुछ अंग्रेजी संस्करणों में "यहोवा" किया गया है। [5]रोनाल्ड एफ. यंगब्लड, *एक्सोडस*, एवरीमैन'स बाइबल कॉमेंटरी (शिकागो: मूडी बाइबल इंस्टीट्यूट, 1983),12. [6]टेरेन्स ई. फ्रेदेम, "एक्सोडस, बुक ऑफ," *डिक्शनरी ऑफ दि ओल्ड टेस्टामेन्ट: पेंटाट्यूक* में, एड. टी. डेसमंड अलेक्जेंडर एण्ड डेविड डब्लू. बेकर (डाउनर्स ग्रोव, आईएल.: इंटर वर्सेटी प्रेस, 2003), 249. [7]इन उदाहरणों और अतिरिक्त बातों के लिये, देखें उपरोक्त, 249-50. [8]उपरोक्त, 250. [9]छुटकारा पुस्तक का एक प्रमुख विषय है (6:6, 7; 15:13)। (विल्बर फील्ड्स, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडस*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज [जोप्लिन, मिस्सौरी: कॉलेज प्रेस, 1976], 2.) [10]इसलिये, निर्गमन का मुख्य उद्देश्य एक अन्य अध्याय प्रदान करना है जो "छुटकारे का इतिहास" कहलाता है।

[11]बाइबल की व्याख्या करने वाली एक पुस्तक के अध्याय का शीर्षक इस प्रकार है "भविष्यद्वक्ता: इस्राएल में वाचा को लागू करना।" (गॉर्डन डी.फी एण्ड डगलस स्टुअर्ट, *हाऊ टू रीड द बाइबिल फॉर ऑल इट्स वर्थ*, दूसरा संस्करण [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवन, 1993], 165.) [12]रिचर्ड एन. सोलन एण्ड आर. केन्डल सोलन, *हैण्डबुक ऑफ बिब्लिकल क्रिटिसिज्म*, तीसरा संस्करण, रिवाइज्ड एंड एक्स्पैंदिड (लुइसविल: वेस्टमिंस्टर जॉन नॉक्स प्रेस, 2001), 32. [13]सब्त के निर्देश निर्गमन 16:23-30; 20:8-11; 23:12; 31:13-16; 34:21; 35:1-3 में दिए गए हैं। मिलापवाले तम्बू के निर्माण के लिये वस्तुओं की सूची निर्गमन 25:8-30: 38; 31:6-11; 35:10-19; 36:8-39:32; 39:33-43 में दी गई है। [14]वॉरिन डब्लू. वाइर्सबे, *बि डिलीवर्ड* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कॉलोराडो: विक्टर, 1998), 8. [15]फील्ड से रूपांतरित किया हुआ, 5.